E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 1, Issue- 8 | August 2024

सेना पर बनने वाली हिन्दी फिल्मों में बदलते कथानकों की सत्यता पर एक नजर

डॉ० यतीन्द्र सिंह कुशवाहा [1], उदय कुमार [2]

[1] शोध निर्देशक, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, डी० ए० वी० कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

[2] शोधार्थी, हिंदी विभाग, डी० ए० वी० कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

भारत में हिन्दी सिनेमा की शुरुआत 1890 के दसक में पहली बार हुआ लेकिन 1896 से लेकर आज तक की सेना पर बनी फिल्मों पर एक नजर दें तो पाएंगे की सेना परआधारित फिल्म बनाने वाले निर्देशक या यूं कहे की बदलते परिस्थितियों को ध्यान में रखर फिल्मों के कथानक में लगातार बदलाव करके फिल्में बनाई जाने लगी है। जब हम सेना पर बननेवाली फिल्मों की बात करते हैं तो ज़्यादातर फिल्मों के कथानक को दुश्मन देशों के साथ हुए युद्धों के इर्द्ध गिर्द्ध घूमते हैं तो कुछ फिल्म देश के अंदर भारतीय सेना द्वारा उग्रवादियों व नक्सली के खिलाफ लड़ा जाने वाला फिल्म मिलता है लेकिन इन पर आधारित बहुत सीमित फिल्में बनी है।

फिल्में जो देश की सीमा और देश के अंदर भारतीय सेना द्वारा लड़ी जा रही थे वे निम्नलिखित हैं –

हक़ीक़त 1964,
हिंदुस्तान की कसं 1973,
प्रहार :द फ़ाइनल अटैक 1991,
बार्डर 1997,
में जर साब 1998,
एल ओ सी :कारगिल 2003,
अब तुम्हारे वतन साथियों 2004,
टँगो चार्ली 2005,
फौजी : द आयरन मैन 2009,
एक था टाइगर 2012,
द गाजी अटैक 2017,
परमाणु : द स्टोरी ऑफ पोखरण 2017,
उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक 2016,
द टेस्ट केस 2017,
गुंजन सक्सेना 2020,
अवरोध 2020 (वेब सिरीज़)
शेरशाह :2021,
सैम माणिक शॉ 2023,
जवान 2023 आदि फिल्में हैं।

उपर्युक्त लिखे फिल्मों को हम तीन भाग में बांटकर कथानकों को समझने का प्रयास करेंगे।

पहले भाग में वर्ष 1947 से लेकर 1975 तक की फिल्मों को शामिल करेंगे।
दूसरे भाग में वर्ष 1976 से लेकर 2000 तक की फिल्में शामिल करेंगे।
तीसरे भाग में वर्ष 2001 से लेकर 2023 तक फिल्में शामिल करेंगे।

तीनों भागों में हम यह समझने का प्रयास करेंगे की भारत द्वारा लड़े गए पाकिस्तान और चीन से युद्ध ने कैसे भारतीय सैनिक को अंतराष्ट्रीय सीमा पर चुनौतियों को बढ़ाया और दूसरी तरफ देश की सीमा के अंदर कैसे नजली व उग्रवादियों ने आंतरिक चुनौतियाँ बढ़ायी और साथ ही इन सौनिक के परिवार को किस तरह की सघर्षों का सामना करना पड़ा तो एक अन्य पहलू यह भी देखेंगे की सैन्य सगठन के अंदर भेदभाव फिल्मों में किस तरह से दिखाया गया है –धार्मिक आधार, लैंगिक आधार, जाति के आधार पर भेदभाव, क्षेत्र के आधार पर भेदभाव आदि।

ध्यातव्य हो की पहली बोलती फिल्म 1913 में "आलमआरा " (संसार की रोशनी) को थियेटरों में लाया गया जो राजा हरिश्चंद्र की कहानी है। और इस समय बनने वाली फिल्में या तो ऐतिहासिक थे या जादुई किस्म के थे और इन सभी फिल्मों में आदर्शवाद हावी था। आदर्शवाद हावी होने का एक बड़ा कारण थे इस समय महात्मा गांधी का भारत आगमन और सत्य और अहिंसा के माध्यम से अंतिम से रूप से हृदय परिवर्तन कराकर सुखद अंत सिनेमा में देखने को मिलता था और यही आदर्शवाद हमारे साहित्य में भी नजर आता था।

जैसे जैसे समय बीता वैसे-वैसे फिल्मों के कथानक में बदलाव आने लगे, इसके पीछे का कारण यह था की समय के साथ साहित्य के विषय और मुद्दे भी बादल रहे थे- जैसे आज़ादी के पहले स्वतंत्रता पाने के लिए लोगो में देशभक्ति का रंग भरने के लिए साहित्य और कवित लाइक जा रहे थे लेकिन आज़ादी मिलने के बाद भारतीय नेताओं द्वारा नागरिकों को दिखये गए सपने जिसमें स्वतंत्रता उपरांत सभी को उसके अधिकार और मूलभूत आवश्यकता की चीजे मुहैया कराई जाएंगी किन्तु आज़ादी के बाद नेतों द्वारा दिखाये गए सपने, सपने बनकर रह गए जिस कारण लोगो में निराशा छाया हुआ था लोग आजादी के बाद ये सोचने पर मजबूर हुए की पहले अंग्रेज़ हमारी सुविधाएँ पर ध्यान नहीं दिया लेकिन अब देश के नेता भी हमारी कोई चिंता नहीं कर रहे थे, दूसरी तरफ जाति के नाम, गरीबी के नाम पर लोगो का शोषण प्रारंभ हुआ जिससे समाज में विषमता और ज्यादा बढ़ने लगा।

इन पहलुओं के अलावा एक वर्ग ऐसा था जो सिर्फ देश की सीमा की सुरक्षा और नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोपरि रखा और वे थे 'भारतीय सैनिक '।

आज़ादी मिलने के साथ ही पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर हमला, तब भी भारतीय सैनिक ने साहस से मुक़ाबला कर भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखा।

अगर इस पहले भाग के रूप में देखे तो इस समय की फिल्में वर्ग संघर्ष (जमींदार - किसान, उंच जाति - निम्न जाति, अमीर - गरीब) दिखया जा रहा था तो दूसरी ओर अँग्रेजी शासन कल में भारतीय और भारतीय सैनिको द्वारा दिया गया बलिदान और साहस पर फिल्में दिखाया गया। मुख्य रूप से आजाद भारत में भारत -चाइना युद्ध 1962 में हुए इस युद्ध में जहां भारत -चाइना को भाई मानता था (हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा) वही दूसरी ओर चीन भारत की पीठ में छुड़ा घोपने का काम करता है। जिस भारत को आजाद हुए 15 वर्ष ही हुए थे और उस समय सरकार सारा व्यय देश के नागरिकों के उत्थान में करना चाहता था और कृषि विकास,आधारभूत संरचना, उद्योग विकास हेतु कार्य कर रहा था जिस कारण सैन्य व्यय बहुत कम किया गया इस उम्मीद में की चीन से भारत को कोई खतरा नहीं है लेकिन चीन द्वारा इस भरोसे का फायदा उठाकर भारत को लहूलुहान करने का प्रयास किया गया था।

इसी युद्ध पर आधारित पहली फिल्म वर्ष 1964 **में ' हक़ीक़त '** नाम से बनाया गया। इस फिल्म का नायक धर्मेंद्र ने इस फिल्म में एक सैनिक के साहस और बलिदान का पर्याय बनकर लोगो के अंदर देशभक्ति की बीज बोया। इस फिल्म में लेह लद्दाख के क्षेत्र में फिल्माया गया था जिसमें स्थानीय लोगो से अच्छे संबंध को दरश्य गया वह की स्थानीय संस्कृति की झलक भी फिल्म में देखने को मिलता है। इस फिल्म में हिन्दी चीनी भाई भाई के नारे के बाद चीन द्वारा भारतीय क्षेत्र पर हमला किया जाता है लेकिन जबतक पहली गोली चीन द्वारा नहीं चलायी गई भारत ने जवाबी कारवाई नहीं लेकिन जब चीन के तरफ से हमला होता है तो भारत की जवाबी कारवाई में बड़ी संख्या में चीनी सैनिक मारे जाते हैं, एक एक भारतीय सैनिक चीन के 20-20 चीनी सैनिको को मारकर शहीद हुए थे,। भारतीय सैनिक के पास संसाधनो की कमी (बंदूक, गोला-बारूद)

के कारण भारतीय सैनिको को कुछ क्षेत्रो को छोडकर पीछे हटना पड़ा। भारतीय सैनिक कई दिनो से भूखे रहकर पूरे साहस से युद्ध लड़ा। गोला बारूद, गोली खत्म हो जाने के बावजूद भारतीय सैनिक पूरे साहस से चीन के सैनिको से लडे।

इस युद्ध में भारत अपना कुछ क्षेत्र खो देता, सरकार के आदेश के बाद भारतीय सैनिक पीछे हटते हैं। जब युद्ध हो रहा था तो देश में दिवाली का पर्व था लेकिन हमारे बहादुर सैनिक हमें सुरक्षित रखने के लिए बार्डर पर खून की होली खेल रहे थे। इसी युद्ध में पराजय के भारतीय सैनिक के बलिदान को लता मंगेशकर ने एक गीत गया था –

"कर चले हम फ़िदा जानो-तन, साथियोअब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई, फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं, सर हिमालय का हमने न झुकने दिया

मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो "

यह भी जानना जरूरी है की वर्ष 1962 के युद्ध में भारत की पराजय से खुश हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान ने वर्ष 1965 में भारत पर हमला कर देता है और 'ऑपरेशन जिब्रालटर' के माध्यम से हजारों आतंकवादी को भारतीय सीमा में भेजा तो दूसरी ओर 'ऑपरेशन ग्रांड स्लैम ' द्वारा जम्मू कश्मीर के अखनुर में हमला कर देता है।

जवाबी कारवाई में भारतीय सेना ने इन आतंकवादियों को या तो वापस भेजने पर मजबूर किया या उसका जीवनलीला समाप्त कर दिया। 6 सितंबर 1965 तक भारतीय सेना पाकिस्तान की सीमा में घुसकर लाहौर और सियालकोट की ओर बढ़ा, साथ ही हाजी पीर दर्रा पर कब्जा कर लिया।

इस युद्ध पर आधारित कोई फिल्म संभवतः नहीं किन्तु '1965: भारत का प्रतिशोध ' नाम से डॉक्यूमेंटरी है तो ' परमवीर चक्र ' नाम से टीवी पर एक सिरीज़ था जिसमें वीर सैनिको के संघर्ष और शौर्य को दिखया गया है।

ऐसी ही फिल्म '1973 में हिंदुस्तान की कसम' नाम से बना जो वर्ष 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध पर आधारित है। कैसे यह युद्ध की शुरुआत हुई, इसके क्या कारण थे ? भारतीय सैनिको को कितने मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ा और कैसे पूर्वी पाकिस्तान, आज का बांग्लादेश बन जाता है, जानने को मिलेगा। भारत इस युद्ध में विजय होता और पाकिस्तान के हजारों सैनिको भारत द्वारा बंधक बनाए जाते है जिन्हे बाद में समझौता के बाद छोड़ा जाता है।

इस फिल्म को चेतन आनंद के निर्देशन में बनाया जाता है जिसके मुख्य कलाकार राजकुमार और अमजद खान थे और इनहोने अपने किरदार को बख़ूबी निभाया था।

यह फिल्म भारतीय सेना और वायु सेना को केंद्र में रखकर बनाया गया जेएसके लिए सेना द्वारा 'ऑपरेशन कैम्बलाबा मिशन ' चलाया जाता है और पाकिस्तानी एयरबेस को तबाह कर दिया जाता है। इस फिल्म में दिखया गया है की कैसे सेना के हर सैनिक, पायलट अपने जान की चिंता किए बगैर लगातार देश की सीमाओं को सुरक्षित रखा।

इस फिल्म ने बताया की सेना न सिर्फ सीमाओं पर लड़ते है बल्कि उसका परिवार, उस राष्ट्र के लोग उनके साथ मानसिक स्तर पर लड़ते हैं। कुछ देशभक्ति के गीत भी इस फिल्म में रखकर नागरिकों के खून में देशभक्ति की बीज बो देता है। लेकिन एक बात जो ध्यान दिया जा सकया है की जब भारत या भारतीय सैनिक द्वारा कोई युद्ध जीता जाता है तो पूरा भारत का विजय माना है लेकिन जब कुछ आतंकी द्वारा भारतीय क्षेत्र या लोगो के समूह पर हमला किया जाता है तो कुछ लोग राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सेना पर गलत बयानबाजी करने लग जाते हैं जो भारतीय एकता और अखंडता के लिए सही नहीं है।

दूसरे भाग (1976-2000) की बात करें तो इस समय तक भारत में आपातकाल लागू हो चुका था तो वर्ष 1971 में हुए भारत पाकिस्तान युद्ध के प्रभाव भारतीय लोगो पर भी पड़े (भारतीय से तात्पर्य भारतीय सैनिक भी हैं)।

इस भाग में सेना जहां देशभक्ति बलिदान साहस और शौर्य का पर्याय है तो दूसरी तरफ सैनिकों के परिवारों का संघर्ष भी दिखया जाने लगा, अगर सैनिको के परिवार प्रभावित होते हैं तो सैनिको के व्यक्तिगत या मानसिक संगर्ष भी बढ़ जाता है लेकिन फिर सेना ने देश को परिवार से ऊपर ही रखा।

वर्ष **1997 में बार्डर** फिल्म थियेटरों में आया, यह भारत -पाकिस्तान युद्ध 1971 पर आधारित है। वर्ष 1973 में आए हिंदुस्तान की कसम भी भारत-पाकिस्तान युद्ध पर आधारित था किन्तु इसमें ज़्यादातर कथानक युद्ध के आस पास ही रहता है किन्तु जब फिल्म बार्डर की बात करें तो इसमें जहां एक ओर सैनिको के पराक्रम, साहस, बलिदान का परिचय दिया तो दूसरी ओर एक सैनिक की व्यक्तिगत जीवन कैसे प्रभावित होता है बहुत ही संवेदना के साथ दिखाया गया है।

कुछ सैनिक का विवाह होता है तो युद्ध के ख़बर सुनकर चाहकर भी अपने परिवार के साथ नहीं रुक पाता है क्यूंकी उसके लैये देश पहले और परिवार बाद में है। दूसरे सैनिक की माता जी अपने बेटे के सही सलामत रहने की दुआ करती रहती है, अपने बेटे के इंतज़ार में रहती है की उसका बेटा जंग जीतकर घर आएगा और विवाह की डोर में बंधेगा लेकिन वापस जंग जीतकर कर तिरंगे में लिपटकर आता है।

ध्यातव्य हो की वर्ष 1990 के दशक में जम्मू कश्मीर में आतंकवादी अपने पैर जमाने लगे थे जो भारतीय एवं भारतीय सैनिको के लिए चूनौती बनकर उभरा थे जो आजतक कश्मीर घाटी में छुपकर है। इन आतंकी समूहो को स्थानीय लोगो का समर्थन प्राप्त होने के कारण ये कश्मीर में हिंदुओं का कत्लेआम कर रहे थे जो भारतीय सैनिक के लिए बड़ी चूनौती बनकर उभरा। इसी को ध्यान में रखकर एक फिल्म ' कश्मीर फ़ाइल्स के नाम से बनाया गया। वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध होता है जिसमें कुछ पाकिस्तानी सैनिको द्वारा कारगिल के बहुत ही रणनीतिक चोटी पर अधिकार कर लिया जाता है जो भारतीय एकता अखंडता के लिए खतरा था, अतः जवाबी कारवाई में भ्रतीय सैनिकों द्वारा ' ऑपरेशन विजय' चलाया गया और पाकिस्तान को हराने के बाद भारतीय सैनिक ने भारत की अखंडता को बनाए रखा।

कारगिल विजय पर एक फिल्म LOC: KARGIL **वर्ष 2003** में पर्दे पर उतारा गया, इस फिल्म में युद्ध के साथ साथ भारतीय सैनिको की साझी समस्याओं को भी दिखाने का प्रयास निर्देशक द्वारा किया गया है जिस कारण फिल्म का समय तीन घंटे से बढ़कर 4 घंटा 15 मिनट का हो गया। इस फिल्म में कारगिल विजय में सबसे अहम भूमि परमचक्र विजेता विक्रम बत्रा (अभिषेक बच्चन) द्वारा निभाया जबकि लेफ्टिनेंट मनोज पांडे (अजय देवगन) ने इस क्षेत्र के सैनिको का नेतृत्व किया था। यह फिल्म भावनात्मकता के स्तर पर नई ऊंचाई छूता है।

जहां कारगिल पर विजय प्राप्त करने की खुशी है तो कुछ सैनिको के शहीद होने से सभी के आँखों में गम के आँसू थे। इस फिल्म को देखने पर दर्शक को लगता है की काश वे भी युद्ध भूमि पर होते और देश के लिए कुछ कर गुजरने का मौका मिलता।

'लक्ष्य' वर्ष 2004 में फरहान अखतर द्वारा निर्देशित और ऋतिक रौशन द्वारा अभिनीत यह फिल्म कारगिल युद्ध पर आधारित है। इस युद्ध में एक तरफ सच्चे सैनिक जो अपने देश के लिए कुछ कर गुजरने को तत्पर है और देश को दुश्मनों से सुरक्षित रखना चाहता है।

ध्यातव्य हो यही सैनिक (करण शेरगिल=ऋतिक रौशन) जो सेना जॉइन करने से पहले एक आलसी, डरपोक, लक्ष्यहीन युवा था लेकिन सेना में उसकी दिलचस्पी थी और वो भारतीय सैन्य अकादमी में भर्ती होता है किन्तु यह आलसी आलसी और डरपोक युवा सेना की कठोर प्रशिक्षण और अनुशासन से घबराकर भाग जाता है किन्तु वह पुनः हिम्मत करके,एक देशभक्त के रूप में सेना जॉइन करता है और कारगिल युद्ध में अहम भूमिका निभाता है और भारतीय सेना को विजय हासिल होता है।

यह फिल्म ने केवल देशभक्ति को जगाता है बल्कि हर उस युवा के लिए है जो अपने लक्ष्य के प्रति या उदासीन है या उसे लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाइयों से डरता है। यह लोगो में इच्छाशक्ति को जगाकर कोई भी असंभव लक्ष्य प्राप्ति का साहस देता है। इस फिल्म में एक शंकर -एहसान –लॉय द्वारा गया एक गीत प्रेरणादायी है –

"कंधों से मिलते हैं कांधे
कदमों से कदम मिलते हैं
हम चलते हैं जब ऐसे तो
दिल दुश्मन के हिलते हैं"

वर्ष 2005 में मणिशंकर के निर्देशन में पर्दे पर हरत के आंतरिक भागो में नक्सल व उग्रवादियों को आधार बनाकर **'टँगो चार्ली '** फिल्म बनाया।

इस फिल्म का नायक मोहम्मद अली(अजय देवगन) तरुण चौहान (बॉबी देओल) तथा फ्लाइट लेफ्टिनेंट शेखर शर्मा (संजय दत्त) ने अहम भूमिका निभाया।

इस फिल्म में अर्धसैनिक बलों के सामने विभिन्न चुनौतियों को दिखाया गया है –

- असम में उग्रवादियों के खिलाफ युद्ध
- गुजरात में सांप्रदायिक दंगो के बीच सेवाभाव
- पश्चिम बंगाल में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति बनाने हेतु
- कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिको/घुसपैठियों के खिलाफ लड़ाई को दिखाया है

समग्र रूप से इस फिल्म के माध्यम से सैनिको के सामने आने वाले चुनौतियों को दिखाया गया है की सैनिक खुद को खतरे में रखकर हमारी /नागरिकों की /सीमा सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

इसके साथ ही वर्ष 2008 में समर खान द्वारा निर्देशित फिल्म **'शौर्य '** भारतीय सेना में कोर्ट मार्शल पर आधारित है जिसमें धर्म के आधार पर भेदभाव को दिखाया गया है। इस कहानी को 1990 के दशक में जम्मू कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के बढ़ने के बाद सुरक्षा में लगे सैनिको से प्रारम्भ होता है। इस फिल्म के मुख्य किरदार हैं –

राहुल बॉस	-	में जर सिद्धार्थ चौधरी
के.के. में नन	-	ब्रिगेडियर प्रताप
देपक डोबरियाल	-	कैप्टन जावेद खान
जावेद जाफरी	-	में जर आकाश कपूर

यह फिल्म मूलतः सैन्य सगठन के भीतर धार्मिक भेदभाव को केंद्र में रखकर सत्य और न्याय की जीत को स्थापित किया है। इस फिल्म में कैप्टन जावेद खान पर में जर वीरेंद्र (पीयूष मिश्रा) की हत्या का आरोप लगाया जाता है जिस कारण जावेद खान को कोर्ट मार्शल का सजा मिलता है लेकिन जावेद खान इस हत्या में शामिल था या नही इसकी जांच के लिए में जर सिद्धार्थ चौधरी को अधिकृत किया जाता है और जावेद खान के वकील के रूप में काम करता है। शुरू में सिद्धार्थ चौधरी केस को हल्के में लेता है लेकिन यह समझ आने पर की में जर विरेदरा की हत्या जावेद खान ने नहीं की है बल्कि उसे पूर्वाग्रह के आधार पर मुसलमान होने के कारण उसे फसाया जा रहा है क्यूंकी ब्रिगेडियर प्रताप मुसलमान को पसंद नहीं करते थे इसलिए हत्या के मामले में फंसाकर कोर्ट मार्शल कर दिया जाए किन्तु भारतीय सेना किसी धर्म और जाति में नही बंटा है उसकी एक ही जाति है,धर्म है 'भारतीय सेना'। कैप्टन जावेद खान को इस झूठे हत्या के केस से बचा लिए जाता है। संभवतः थोड़े स्तर पर कही न कहीं भेदभाव हुआ होगा किन्तु भारतीय सेना द्वारा इस तरह के भेदभाव को रोका गया।

लेकिन ध्यान देने पर एक बात जो समझ आएगा वह यह है की वर्ष 2000 के पहले फिल्में जहां सैनिकों को साहसी, बलिदानी, शौर्यवान कहा गया था, कोई भी युद्ध में विजय, किसी एक सैनिक की नहीं बल्कि सामूहिक रूप से पूरे सेना का विजय होता था लेकिन वर्ष 2000 के बाद इसके कथानक में बदलाव आया, अब भी सेना साहसी, शौर्यवान और बलिदानी है किन्तु अब युद्ध में विजय समूहिक विजय में सैनिको का योगदान को नगण्य करके किसी एक सैनिक को नायक के रूप में दिखाया जाने लगा। जैसे - **उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक 2016**,जिसमें विकी कौशल (नायक) ने मुख्य नायक का किरदार निभाया। इस फिल्म में पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा 'उरी' में सेना छावनी पर हमला किया गया जिसमें भारतीय सेना के 19 सैनिक शहीद हुए थे, का बदला लेने पर आधारित है। जब सैनिक शहीद हुए थे एक तरफ भारतीय सेना इस घृणित हमला का बदला लेने के तत्पर था तो दूसरी ओर भारतीय जनमानस सरकार पर इस हमले का बदला लेने का दबाव बना रहा था।

इस फिल्म को पर्दे पर 2019 में उतारा गया। यह एक ऐसी फिल्म थी जो देश के नागरिकों को उस दिन की याद दिला देती है जब हमारे देश के बहादुर सेना शहीद हुए थे, उस क्षण को याद करते ही आँखों में आँसू आ जाते हैं।

यह फिल्म देशभक्ति से ओत-पोत है जिसमें शहीद सैनिको के परिवारों के आँसू का बदला था। इस स्ट्राइक के माध्यम से यह संदेश दे दिया गया की कोई भी आतंकी अगर इस तरह का हरकत करेगा तो भारत उसके घर में घुसकर बदला लेगा। लेकिन जैसा की मैंने पहले कहा था की फिल्म के कथानकों में वर्ष 2000 में बाद देखने को मिलने लगा था अब सेना पर आधारित फिल्मों में कोई एक सैनिक को नायक के रूप में दिखाया जाने लगा और बटालियन के सैनिको के योगदान को नजरंदाज कर दिया गया। जबकि वास्तव में उरी अटैक का बदला जब सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से लिया गया और उसमें मिली सफलता के बाद सभी सैनिको का उत्साह वर्धन किया गया था।

गुंजन सक्सेना : द कारगिल गर्ल फिल्म भारतीय वायुसेना की पहली महिला पायलट पर आधारित है जो वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करती है। यह फिल्म सच्ची घटना पर आधारित है जिसमें गुंजन सक्सेना बचपन से पायलट बनने का सपने देखती है लेकिन हमारा समाज और पितृसत्तात्मक सोच के कारण महिलयों को सेना में जाने को सही नही मन रहे थे। यहाँ तक उसका भाई भी गुंजन को सेना में शामिल करने के पक्ष में नहीं थे लेकिन गुंजन सक्सेना के पिता गुंजन के सपने को पंख देते हैं और वह में हनत करके भारतीय वायुसेना जॉइन करती है लेकिन सेना में महिला नही होने के कारण कई तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता है। जैसे महिला बाथरूम का ना होना, पुरुष सैनिको द्वारा उसे बार बार कमजोर साबित करना आदि सेना में समानता के बल को कमजोर करता है। लेकिन गुंजन के पिता द्वारा दिया गया साहस अकुर गुंजन की में हनत और आत्मविश्वास ने उसे कारगिल युद्ध में भारत विजय में अहम भूमिका निभाया और दुश्मन देश के ठिकानों का पता करके उसको बर्बाद कर दिया।

विष्णुवर्धन के निर्देशन में 2023 में बनी फिल्म **'शेरशाह'** जिसका नायक सिद्धार्थ मल्होत्रा (विक्रम बत्रा) को पर्दे पर उतारा गया।

यह फिल्म वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले साहसी सैनिक विक्रम बत्रा की कहानी है जिसमें कैसे विक्रम बत्रा ने कैसे और किन परिस्थितियों,चुनौतियों का सामना करके भारत को विजय दिलाया और शहीद होगा। यह सच है की विभिन्न सैन्य अधिकारियों ने विकरम बत्रा के साहस को सराहा है और उनकी कारगिल विजय में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा है किन्तु यह फिल्म कहीं न कहीं व्यक्ति केन्द्रित फिल्म बन जाता है जिससे अन्य शहीद सैनिक की गाथा अधूरी रह जाता है।

ऐसा ही एक अन्य फिल्म **सैम बहादुर** जो एक सेना अध्यक्ष सैम माणिकशॉ पर आधारित है जिसमें सेना अध्यक्ष की का किरदार विक्की कौशल अदा किया है। यह फिल्म वर्ष 1971 में पाकिस्तान द्वारा भारत पर किए गए हमले पर आधारित है जिसमें माणिकशॉ की भूमिका को बड़े गहराई से उतारा गया है। इसमें यह दिखने का प्रयास किया गया है की सेना का काम शासन करना या राजनीतिक करना नहीं बल्कि देश की सुरक्षा करना है।

सैम माणिकशॉ की रणनीति यही रही की भविष्य की चुनौतियों को सम्झना और उसकी तैयारी हर मोर्चे पर पहले से करके रखना। उनकी ईमानदारी,साहस को आज भी पूरा भारत सम्मान की नजर से देखता है। इस तरह की फिल्में बनने से हमारे आने वाली पीढ़ी हमारे इतिहास को न केवल पढ़ सकती है बल्कि उसे फिल्म देखकर अपने अंदर देश के प्रति और ज्यादा देशभक्ति की भावना को जगाए।

लेकिन इस तरह की फिल्में जो किसी एक सैनिक को नायक के रूप में दिखा देने से अन्य सैनिकों के योगदान को भुला दिया जाता है। इससे अन्य सैनिको में उत्साह कम हो सकता है।

निष्कर्षतः कहा जो सकता है की हिन्दी सिनेमा में नायक का किरदार पूरी तरह से निर्देशक पर निर्भर करता है। निर्देशक जब तक लाभ को सर्वोपरि नहीं रखता तब तक किरदार और कथानक से छेड़छाड़ की संभावना कम रहता है जिसका एक उदाहरण है फिल्म एल ओ सी :कारगिल जो लगभाग 4 घंटे से ज्यादा समय की फिल्म है, निर्देशक चाहता तो तीन घंटे में खत्म कर सकता था लेकिन उन्होने किरदार और सभी घटनाओं को शामिल करने के लिए समय सीमा नहीं रखा और देश के सामने कारगिल की सच्चाई को दिखया की कैसे हमारे वीर जवान भारत की अखंडता को बनाए रखने के लिए अपनी जान को हथेली पर रखते है।

लेकिन जब निर्देशक के लिए पैसे कमाना प्राथमिकता हो तो वह कथानक के साथ साथ देशभक्ति फिल्मों में हल्का कथानक से और फिल्म को मसालेदार बनाकर दर्शकों के सामने परोस देते हैं।

लेकिन यह जानना जरूरी है की सिनेमा ने देश में देशभक्ति बढ़ाने में अहम भूमिका निभाया है। शिक्षित हो, अशिक्षित हो सबको समान रूप से देश की एकता और अखंडता के प्रति एकजुट किया और दिल में देश के प्रति प्यार, अनुराग को बढ़ाने का काम किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पारख, जवरीमल्ल. (2021). हिन्दी सिनेमा में बदलते यथार्थ की अभिव्यक्ति. दिल्ली: नयी किताब प्रकाशन
2. सहगल, राजेन्द्र. (2011). सिनेमा वक्त के आइने में . दिल्ली: संजय प्रकाशन
3. सिंह, कुमार, अजय. (2012). मीडिया की बदलती भाषा . प्रयागराज : लोकभारती प्रकाशन
4. राकेश, शिवानी. (2024). सिनेमा को पढ़ते हुए. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन
5. सहाय, संजग. (2023). हिन्दी सिनेमा के सौ साल. दिल्ली : अक्षर प्रकाशन
6. शर्मा, पंकज. (2022). हिन्दी सिनेमा की यात्रा. दिल्ली: अनन्य प्रकाशन
7. ढिल्लों, सिंह, जीत, कंवल. (2024). कितने गाजी आए कितने गाजी गए. दिल्ली प्रभात प्रकाशन
8. वागीश, वरूण. (2013). हिन्दी सिनेमा का बदलता परिदृश्य एक आलोचनात्मक अध्ययन. रोहतक: महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय
9. आनंद, चेतन. (1964), हकीकत. भारत: हिमालय फिल्म
10. आनंद, चेतन, (1973). हिन्दुस्तान की कसम. भारत : हिमालय फिल्म
11. दत्ता, पी, जे. (1997). बार्डर. भारत : जे. पी फिल्म
12. दत्ता, पी, जे. (2003). एल. ओ. सी : कारगिल. भारत : जे. पी. फिल्म
13. अख्तर, फ़रहान. (2004). लक्ष्य. भारतः यू टी वी मोशन पिक्चर
14. शंकर, मणि. (2005). टाँगो चार्ली. भारत: श्री अष्टविनायक सिने
15. खान, समर. (2008). शौर्य. भारत: मोजर बेयर
16. घर, आदित्य. (2019). उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक. भारत: आर एस वी पी मूवीज़
17. शर्मा, शरण. (2020). गुंजन सक्सेन. भारत : धर्मा प्रॉडक्शन
18. गुलजार, में घना. (2023). सैम बहादुर. भारत : आर एस वी पी मूवीज